

श्री श्री गुरुः

सर्वत्र वाङ्मयं राजकायमिदं ॥ केन कथं चित् प्रियदेवि अत्र अस्मिन्नाहं कहिद
विजयं यत्नो वि वाङ्मयि जगत् प्रथम

अथ योऽहं कोपरीत

आशा शक्तिवर्ध

2322

ASHA ARCHIVES

सुखनयन

सुखनयन

॥ अथ घोडा को रोग परिदमा ॥ वेधा कफ वात पित्त देधि उव जन्त
विचक्षे शास्त्रे विचार गहिगु प्रथम घोडा को रोग उत्त पत्नी रक्त देधि वृजं ह्व
ह्वर रक्त का वे गास्ते घोडास्ते दुष पाउ ह्व न स अर्थ घोडा क मर क ठा डनु तला प्रा क्ती दोष म
क क वात पित्त को उवा ड्गनु विचक्षे शास्त्रे हरि हर राई घोडा को रक्त क ठा डनु क डुशा मे ह्मा मारक्त
क ठा डनु मन्ना अस र मा क ठा डनु नाना थो रै बुवानु ध्या मधे रै त पा डनु व मा स रा हा न्या जगा मा
अर्वा सा सीत रा क्तु मक्त को पानी न पि या उन पाव कि औषधी बुवा डनु क धरा का मा सुमा म सता
मलाई बुवानु ये स विधी मगर रक्त क ठाई डिनु का तै आहि गमा को घोडा क तै मटि म म आ पनी
न रोग शास्त्रे ती वडि दुद ॥ घोडा को पारि प्रा मा ह्वई ॥ या ह्वे मा ग व ड उत्त मा ग न म ठ क तै या

राम
॥१॥

अथ मरी

[illegible]

[illegible]

॥ ३ ॥ के आकाश वरुणा उरुतीत होर ॥ धा उरुवन्मा काहता ताकदर ॥ माता काका काका

सोर १० एरु रिनी वमक रोर १० भागना

लोकदम गयो मा-मातेर कोना मरुहता महोतीर कद मरुहो ॥ जह रव तपस्य माता
वज्रोला १० उरुकि मतोवा १ मरिच तोला ५ अरुज तोला २० अरु रता ला १०
लाग तोला ५ यत्नी २५ वा २ अत के र्खानी मै बल को कते पनल गा मा आधा हो गा त
जाको तुला का डवा ई ॥ तोरि को ते ल भा गण दे ला रहे त भाग १ गंध त भाग १ सुत भाग
ये ती अल गरिते हिते त माय का ईला उनु भावे ॥ पीत लागा डवा ई ॥ गुन्दी को गुड
पुरा ना का मस को मृत ला भाग १ मरु म गरिते त सं गरु ग डी ल गा उनु वा तन
हो ॥ छोडा मोता उनु ॥ हो र मा १० जे जान माना म क रोरि माना १ मरिच
मरु प खुती तेर वाडा तो ला १० हो र मा १० जे जान माना म क रोरि माना १ मरिच
मक रोर ॥ दाता नी म्ब रोर ॥ करानी म्ब रोर ॥ हो र तो ला ४ छोडा पुन ना लो व रोर ॥

मोरा १० एरु रिनी वमक रोर १० भागना

[illegible]